सकारात्मक सोच है, सकारात्मक चिंतन है और हम लोग कहते हैं कि राष्ट्र की ये जो संकल्पना है जोड़ने वाली है, तोड़ने वाली नहीं। ये मूलभूत अन्तर विश्व के अन्य लोगों के बीच और भारत के लोगों के बीच से आता है और इसलिए **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** का नारा भारत के लोग ही दे सकते हैं। क्योंकि भारत की कल्पना भिन्न प्रकार की है तो **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** का नारा सारे विश्व को जोड़ने वाला सिद्ध होता है। इसलिए जिन्होंने राष्ट्र की संकल्पना को नकारात्मक दृष्टि से रखा, उन्हें इस बात को समझने की आवश्यकता है कि राष्ट्र की संकल्पना सकारात्मक भी हो सकती है। भारत उसका एक उदाहरण है तो इसलिए यह अनुभव हम सबको है, दुनिया को हमने यह अनुभव दिया है, हजारों वर्षों का यह अनुभव है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक परमपूज्यनीय श्री गुरूजी ने इसके बारे में विचार रखते हुए कहा कि राष्ट्रवाद भी दो प्रकार का होता है। एक है सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और दूसरा है राजनैतिक राष्ट्रवाद। अब इसको भी समझने की आवश्यकता है। हम जब सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की कल्पना करते हैं, जो विचार रखते हैं तो यह सारी दुनिया के सामने मानवता का, मानवीयता का संदेश देने वाला विचार है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद शास्त्र के आधार पर, जीवन-मूल्यों के आधार पर, जीवनशैली के आधार पर, श्रेष्ठता के आधार पर और इसलिए हम लोग ही कह सकते हैं कि **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** हम लोग ही कह सकते हैं कि विश्व का कल्याण हो। यह घोषणा दुनिया में और किसी ने नहीं की, हम लोगों ने की है। जब हमने कभी घोषणा की होगी **'कुर्वन्तो विश्व आर्यम्'** तो कोई एक सम्प्रदाय को लेकर एक विचार को लेकर एक विषय को लेकर एक किसी पूजा पद्धति को लेकर नहीं कहा तो आर्य शब्द की विस्तृत व्याख्या करते हुए हमने कहा कि आर्य बनना नहीं, संस्कृति बनना है तो विश्व को संदेश देने वाला आज कौन है? इसको हमने कहा कि यह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है।

पूज्यनीय गुरूजी ने इसको स्पष्ट करते हुये कहा दूसरा जो है, राजनैतिक राष्ट्रवाद है। वह क्या संदेश देता है? वह राजनैतिक राष्ट्रवाद विस्तारवाद का संदेश देता है। साम्राज्य की विस्तार की कल्पना करता है। युवकों को निमंत्रण देता है। आक्रामक बनता है। वह अपनी सीमाओं को बढ़ाने लगता है। दुनिया के छोटे देशों को अपने प्रभावों में लाने की कोशिश करता है और इसलिए राष्ट्रवाद